६. मेघदूत का वियोग-वर्णन

सङ्गम विरह विकल्पे वरमिह विरहो न सङ्गमस्तस्याः ।
सङ्गे सैव तथैका त्रिभुवनमपि तन्मयं विरहे[1] ॥

'मेघदूत' में मूल कथावस्तु यही है कि कुबेर के अभिशाप से यक्ष रामगिरि पर्वत के आश्रमों में निवास करता है। उसकी प्रिया अलका में है। यह शाप यक्ष को अपने कर्त्तव्य-पालन में प्रमाद करने के कारण मिला है: इससे यह प्रतीत होता है कि अपनी इच्छा से कर्त्तव्य का संकल्प लेकर उसका निर्वाह नहीं करना कवि की दृष्टि में एक गम्भीर अपराध है। प्रणय का आकर्षण तीव्र और मन्थनशील होता है। किन्तु, प्रणय भी एक कर्म है और उसके लिए जीवन ने संकल्प किया है। लेकिन, लोककर्म और प्रणयकर्म दोनों में किसी भी रूप में विरोध नहीं होना चाहिए। दोनों की नैतिकता एक ही है। परिणामत: दोनों के प्रति एकरूप कर्त्तव्य-बोध के अभाव का दुष्परिणाम हुआ कि चकवा-चकई का युग्म धनपति कुबेर के अभिशाप से वियुक्त हो गया। कवि का यह अभिप्राय भी स्पष्ट होता है कि जीवन के लिए जो प्रेम सर्वाधिक काम्य है वह संयोग में कम और वियोग में भरपूर होता है। इन दोनों के माध्यम से ही जीवन को पूर्ण बनाया जा सकता है। यह किस प्रकार पूर्णता की ओर बढ़ेगा ? चेतन का आकर्षण सहज और स्वाभाविक होता है, पर अचेतन पदार्थ का आकर्षण प्रयोजनवश होता है। जब अचेतन के प्रति प्रयोजन-रहित आत्मीयता का उदय होता है तो जहाँ एक ओर सीमित से हम असीम होने लगते हैं वहीं असीम से सीमित भी। इन दोनों छोरों के प्रति एकरूप प्रणय-भावना का विस्तार ही पूर्णता की ओर बढ़ना है। लोकजीवन में यह सत्य ही हमें मानवीय उत्कर्ष के शिखर पर बैठाता है। प्रतीतियों के सम-विषम अनुभव ही हमारा बहिष्कार करते हैं। दार्शनिक धरातल पर पुरुष और प्रकृति के एकान्त-मिलन की आधारभूमि है यही सूत्र— चराचर की संवेदना के साथ अपनी मौलिक व्यक्ति-भावना का समानान्तरण।

'मेघदूत' विप्रलम्भ श्रृंगार का अपूर्व काव्य है। चाहे सम्भोग हो या विप्रलम्भ, कालिदास का मन राजशिविर के इर्द-गिर्द के चित्रोपम दृश्यों में, ऋषियों की तपोभूमियों में, पर्वतीय श्रृंखलाओं में, मृगया के जंगलों में—समान रूप से लीन होता है। उनके खिंचे हुए निसर्ग के चित्र केवल साम्प्रदायिक रीति नहीं हैं; उनमें

प्रत्यक्ष निरीक्षण की ताजगी, सहृदयता की भावना, रसिकता तथा कल्पनाओं की उड़ान भी नजर आती है। संयोग और वियोग, दोनों पक्षों का जितना विदग्ध, मर्मस्पर्शी और सरस वर्णन कालिदास ने किया है उतना अन्यत्र दुर्लभ है। कवि अभिव्यक्ति के चरम उपान्त तक आत्मसंवेदन को रूपायित करता है, जहाँ मानवीय अनुभूति के दोनों छोर मिल जाते हैं, और ऐसा प्रतीत होता है कि इसे संयोग-शृंगार कहा जायगा या वियोग-शृंगार। इसे ही काव्यात्मक अभिव्यक्ति की पराकाष्ठा कहते हैं। ऐसा काव्य विश्व-मानवता के अन्तरंग जीवन की विभूति हो जाता है। 'मेघदूत' में कवि यक्ष के माध्यम से जो सन्देश अलका की विरहिणी के पास भेजता है, लगता है वह प्राणों से प्राणों को भेजा जा रहा हो।

कालिदास के काव्य में एक वैसे व्यक्तित्व का स्वरूप उभरता है, जिसमें सम्पूर्णता की लालसा ही नहीं; एकाग्रता और प्रचुर आत्मीयता की भावना तरंगायित होती है। जिस प्रकार प्रकृति दो विरोधी शक्तियों के द्वारा विश्व का सन्तुलन करती है उसी प्रकार कालिदास का काव्य दो विषम भावावेगों की उद्भावना द्वारा कविता-लोक का सन्तुलन करता है। सन्तुलन के औचित्य की पृष्ठभूमि में कालिदास इसीलिए संसार के सर्वश्रेष्ठ कवियों में आते हैं। निराशा, वचनभंग, विधि-विडम्बना, अभिशाप, परिस्थिति की जटिल भयानकता एक ओर, और आशा, विश्वास, पौरुष, वरदान, अनुकूलता दूसरी ओर—दोनों के घात-प्रतिघात और फिर वही अदम्य उत्साह, उल्लास—यहाँ तक कि कालिदास दोनों के चित्रण में पारदृश्वा हैं।

प्रकृति और मानव का सौन्दर्य एक-दूसरे को प्रभावित करता है। प्रणय मानव एवं प्रकृति में समान रूप से परिप्लुत है। यक्ष के समान रामगिरि पर्वत को भी हृदय है। यही कारण है कि मेघ के विदा होने पर वह गर्म आँसू बहाता है। वेत्रवती, निर्विन्ध्या और गम्भीरा के साथ मेघ का निजी प्यार है। मेघ और नदियों की दूरी यहाँ समाप्त हो गई है। चाहे भ्रमर, मृग, वृक्ष हों, चाहे समुद्र, पृथ्वी, प्रासाद—मेघ उनसे मिलकर, उनके साथ रहकर, अपनी सम्पूर्णता का अनुभव करता है। इसका यह अभिप्राय है कि चराचर प्रकृति के बीच सर्वदा प्रेम का व्यापार चल रहा है। प्रकृति पुरुष के वियोग में विह्वला है और पुरुष प्रकृति के विरह में कृश और उत्कंठाओं से भरा।

मेघदूत' में वियोगी यक्ष कृश हो गया है; क्योंकि सुवर्ण कंगन के गिर जाने से उसकी कलाई रिक्त है। यक्ष के रूप का वर्णन एक ही बार हुआ है। किन्तु, यक्ष-प्रिया का रूपांकन अनेक स्थलों में अनायास हो गया है। वह कृशांगी है, उसकी दन्तपंक्ति नुकीली है, उसके ओष्ठ पके बिम्बफल के समान हैं। वह पतली है।

उसकी आँखें चकित हरिणी के नेत्रों के सदृश हैं, उसकी नाभि गम्भीर है, नितम्ब-भार से वह धीरे-धीरे चलती है और स्तन-भार से आगे की ओर झुकी रहती है। इन लक्षणो से युक्त होकर वह अलका की युवतियों के बीच विधि की प्रथम सृष्टि प्रतीत होती है। वह वय:सन्धि को पारकर यौवन में पदार्पण कर चुकी है।

यक्षप्रिया 'मेघदूत' की विरहोत्कण्ठिता स्वकीया नायिका है। यक्ष अपने स्वामी धनपति कुबेर का कार्यकर्त्ता है। फलतः वह पराधीन-वृत्ति है। यक्षिणी गृहिणी है और गृहिणी होने के कारण वह स्वकीया नायिका है। यक्षिणी अपने गृह में है और उसका सहचर शाप के कारण रामगिरि पर। यक्षिणी अकेली है, आर्त्त है और शिशिरमथिता पद्मिनी के समान मुरझा गई है। कालिदास ने प्रोषितभर्तृका यक्षिणी का जो चित्र 'मेघदूत' में चित्रित किया है, वस्तुतः वह संस्कृत-काव्य में अनुपम है। यक्षिणी इस दृष्टि से स्वाधीनपतिका है कि उसका पति अनुगत है। प्रिय यक्ष के प्रवास के दिनों में वह उसके आगमन की प्रतीक्षा में है। यक्ष आता नहीं है; क्योंकि शाप की अवधि पूरी नहीं हुई है। यक्षिणी करवट बदल-बदल रात बिताती है। उसकी इस विरह-व्यथा का अन्त नहीं है। दिन उसके लिए वर्ष जैसा हो गया है। इस दृष्टि से यक्षिणी विरहोत्कंठिता नायिका है और बहुत दुबली-पतली हो गई है। वह चन्द्रमा की एक कला-भर शेष रह गई है। जो रातें प्रियतम के साथ होने से एक क्षण प्रतीत होती थीं वे ही रातें प्रिय के वियोग में अन्तहीन हो गई हैं। आँसुओं का पारावार उमड़ पड़ा है। ये आँसू यक्षिणी के हैं, यक्ष के हैं और हैं महाकवि कालिदास के, जिन्होंने सम्पूर्ण 'मेघदूत' को आँसुओं का महासागर बना दिया है। ऐसा महासागर, जिसका कहीं कूल-किनारा नहीं है। आषाढ़ का मेघ संदेशवाहक मेघदूत नहीं है, वह तो यक्ष और यक्षिणी के आँसुओं का सन्देशवाहक मेघदूत हो गया है। यक्षिणी तो गम्भीर व्यथा-वेदना की मन्दाकिनी हो गई है। जड़-चेतन दोनों इन आँसुओं में डूब रहे हैं।

प्रिय या प्रिया के साक्षात्कार का प्रश्न तो दूर रहा, यहाँ स्वप्न में भी मिलन नहीं हो पाता। लगता है, शयन और स्वप्न दोनों पर आँसुओं ने अधिकार कर लिया है। यक्ष और यक्षिणी का वियोग मेघदूत में चरम व्यथा में परिणत हो गया है। यक्ष मेघ से कुछ कह-सुन लेता है, लेकिन वियोगिनी अलका-सुन्दरी के लिए तो यह प्रथम पीड़ा दारुण है, असह्य है। यक्ष की यह दशा है कि वह प्रियतमा के चित्र रचकर ज्यों ही उसके चरणों पर रखना चाहता है तो चित्रगत उस विरहिणी को देखते ही उसकी आँखों में आँसुओं की बाढ़ आ जाती है और वह उसे देख नहीं पाता। ऐसा लगता है कि विधाता उसके इस सुख को भी सहन नहीं कर पाता।

2026.02.12 09:52

त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागैः शिलाया-
मात्मानं ते चरण पतितं यावदिच्छामि कत्तु'म् ।
अस्त्रैस्तावन्मुहुरुपचितैर्दृष्टिरालुप्यते मे
क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते सङ्गमं नौ कृतान्तः ॥ उ०।४५

यक्ष सान्त्वना के स्वरों में कहता है, "प्रिये ! स्वप्न में तुम्हारे दर्शन होते ही तुम्हारे आलिंगन-सुख के लिए मैं हाथ फैला देता हूँ । मेरी यह करुणाजनक अवस्था देखकर वनदेवताओं के नेत्रों से वृक्षों के पल्लवों पर मोतियों के समान अश्रुकण गिरते हैं । मैं बड़े धैर्य और विवेक से यह विरह-दुःख सहन कर रहा हूँ । प्रिये, तुम भी मेरी तरह उसे सहन करो; क्योंकि किसी को संसार में न तो निरन्तर सुख ही मिलता और न दुःख ही । मानवीय दशा पहिये के किनारे के समान सतत ऊपर और नीचे होती ही रहती है ।"

मेघदूत का आरम्भ और अन्त विरह के आँसुओं में होता है । विरही-जीवन का यह संताप हमें वहाँ पहुँचा देता है, जहाँ सौन्दर्य एवं शिव से युक्त होकर यह मेघदूत शाश्वत विरह का काव्य बन जाता है । वस्तुतः --श्रृंगार की बरसाती नदियों से बहाकर कालिदास का यह काव्य हमें व्यथा के प्रशांत महासागर में पहुँचा देता है । कवि की दृष्टि में यक्षिणी कान्ता, अबला और दयिता है । और यक्ष की दृष्टि में वह वधू, प्रिया और एक पत्नी है । इसके साथ ही वह गेहिनी, कान्ता, तन्वी, श्यामा, प्रिया, द्वितीयजीवित, वाला, सखी और मानिनी भी है । वह श्यामा और रूपगर्विता प्रेयसी है । यक्ष की सहचरी भी है । ऐसी प्रिया के वियोग में वनदेवियाँ तक जिसके दुःख से द्रवित होती हैं, वनस्थली को भी जिसने अपने समान शोकवाली बनाया है, वह वस्तुतः हमारी सत्कामनाओं का पात्र है । मेघदूत की संवेदनशीलता चरमोत्कर्ष पर है । इसमें पशु-पक्षी, देव-गन्धर्व, नर-नारी, लता-वनस्पति-सरिता आदि सबमें एक ही प्रेम-तत्त्व गोचर होता है । सब-के-सब वियोग के एक सूत्र में बँधे हैं । सब मिलाकर मेघदूत विरह-वेदना का एक महासंगीत जैसा है । इसका मूल तत्त्व प्रेम है । सभी इसके अटूट धागे में बँधे हैं । यक्ष की प्रिया मेघ की भाभी है । मेघ और रामगिरि दोनों मित्र हैं । मयूर मेघ का बन्धु है, नदियाँ प्रेयसियाँ हैं और मेघ उनका अनन्य प्रियतम । अलका का बालमन्दार यक्षिणी का पुत्र है । पशु-पक्षी, वृक्ष-लता, चेतन-अचेतन सब प्रेम के बन्धन में आबद्ध हैं । इस वियोग-योग में सारी सृष्टि समाहित हो गई है ।

2026.02.12 09:52